

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 15, अमेरिका में ब्लैक चर्च

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 15 है, 19वीं शताब्दी में इंजीलवाद, फिन्नी और मूडी।

हमने बस खुद को उन तिथियों की याद दिलाई जो हमें मिली हैं। तो आज और बुधवार को, हम व्याख्यान देंगे, लेकिन फिर आप वसंत अवकाश पर हैं, जो संभव नहीं लगता। तो, यहाँ हम हैं, लगभग आधे रास्ते पर। ठीक है, मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 15 पर हूँ।

हम पाठ्यक्रम के तीसरे भाग में आ गए हैं, मध्य मार्ग के वर्ष, 1865 से 1918। और हमने इस बारे में बात की, हमने व्याख्यान संख्या 11 दिया, अमेरिका में ब्लैक चर्च। और यहीं पर हम दूसरे दिन रुके।

यहीं पर परीक्षा का दूसरा घंटा समाप्त होता है। तो, अब आपके पास लेक्चर नंबर 11 के साथ वह सारी सामग्री है जिसकी आपको आवश्यकता है। आपके पास दूसरे घंटे की परीक्षा के लिए आवश्यक सारी सामग्री है।

तो, हम बहुत अच्छी स्थिति में हैं। हम व्याख्यान में लगभग दो दिन आगे हैं, इसलिए यह अच्छी बात है। यह व्याख्यान संख्या 12 है, 19वीं सदी में इंजीलवाद।

तो हम यहीं हैं: 19वीं सदी का इंजीलवाद। व्याख्यान शुरू करने से पहले बस एक शब्द, और वह यह है: 19वीं सदी में इंजीलवाद के विषय पर आप कई तरीकों से बात कर सकते हैं। इसके बारे में बात करने के कई तरीके हैं, शायद इंजीलवाद की कुछ विशेषताएँ, इंजीलवाद क्या है, इत्यादि।

हालाँकि, मैंने व्याख्यान में जो करने का चयन किया है, वह जीवनी के रूप में है। मैं अमेरिकी ईसाई धर्म के दो सबसे महत्वपूर्ण नेताओं को चुन रहा हूँ, जो 19वीं सदी के उत्तरार्ध में अमेरिकी ईसाई धर्म के निर्माता थे। उन्होंने इस आंदोलन का गठन और आकार दिया, जिसे आम तौर पर इवेंजेलिकलिज्म कहा जाता है, जो सुसमाचार का प्रचार है।

दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। इसलिए मैं यही तरीका चुनता हूँ।

और मुझे उम्मीद है कि उनके जीवन, उनके जीवन और अमेरिकी ईसाई धर्म में उनके योगदान को देखते हुए, मुझे उम्मीद है कि इससे हमें यह पहचानने में मदद मिलेगी कि हम किसे इंजीलवाद कहेंगे क्योंकि यह इन दो लोगों के जीवन और मंत्रालय की शिक्षाओं के माध्यम से देखा जाता है। तो, हम चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी से शुरू करने जा रहे हैं। अब वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके बारे में आपने अपनी पाठ्यपुस्तकों में पहले ही थोड़ा पढ़ा होगा यदि आप पढ़ने के लिए तैयार हैं।

लेकिन हम उनसे शुरुआत करेंगे, और फिर ड्वाइट एल. मूडी की ओर बढ़ेंगे। मुझे नहीं लगता कि हम आज इसे खत्म कर पाएंगे, इसलिए यह शायद बुधवार तक चलेगा। तो, चित्र के दाईं ओर चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी से शुरुआत करते हुए, यहाँ चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी की तिथियाँ दी गई हैं, 1792 से 1875 तक।

तो, हम जो करने जा रहे हैं वह उनके जीवन और उनके मंत्रालय, उनके धर्मशास्त्र का अनुसरण करना है, और जैसे-जैसे यह सामने आएगा, यह अपने आप में इंजीलवाद की व्याख्या होगी। और फिर, उनके मंत्रालय को ड्वाइट एल. मूडी द्वारा आगे बढ़ाया गया है। तो, चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी।

ठीक है, चलिए शुरू करते हैं। फ़िनी का जन्म 1792 में वॉरेन, कनेक्टिकट में हुआ था, जैसा कि आप यहाँ देख सकते हैं। तो, वॉरेन, कनेक्टिकट।

मुझे नहीं पता कि आप में से कोई जानता है कि वॉरेन, कनेक्टिकट कहाँ है, अगर आप उससे परिचित हैं। लेकिन फ़िनी का जन्मस्थान यहीं था। और वैसे, यहाँ दाईं ओर फ़िनी है और बाईं ओर मूडी है।

तो, वॉरेन, कनेक्टिकट। अब, जो हुआ, और यह पाठ्यक्रम के लिए बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहा है, तब हुआ जब वह सिर्फ एक बच्चा था, और परिवार ऊपरी राज्य न्यूयॉर्क, अपस्टेट न्यूयॉर्क में चला गया। और वे वास्तव में एडम्स, न्यूयॉर्क नामक स्थान पर चले गए।

एडम्स के साथ मेरा थोड़ा इतिहास है, इसलिए मैं आपको बस एक मिनट में वह कहानी बताऊंगा। लेकिन वे एडम्स, न्यूयॉर्क नामक जगह पर चले गए, जो अपस्टेट न्यूयॉर्क है। अब याद रखें, हमने अपस्टेट न्यूयॉर्क के लिए एक लेबल दिया है।

इसे बर्न्ट ओवर डिस्ट्रिक्ट कहा जाता है। बर्न्ट ओवर डिस्ट्रिक्ट लेबल का कारण यह है कि बहुत सारे समूह अपस्टेट न्यूयॉर्क में शुरू हुए। और हमने मॉर्मन और शेकर्स के बारे में बात की है, और हमने मिलराइट्स और इसी तरह के अन्य लोगों के बारे में बात की है।

खैर, यह लेबल जारी रहेगा क्योंकि ऊपरी-राज्य न्यूयॉर्क, अपस्टेट न्यूयॉर्क में फ़िनेइट पुनरुद्धार शुरू हुआ। तो एडम्स, न्यूयॉर्क जाएँ। अब, एडम्स, न्यूयॉर्क में कुछ चीजें हुईं, और एक 1818 में हुई जब उन्होंने एडम्स, न्यूयॉर्क में कानून की ट्रेनिंग ली।

अब उन दिनों में, आप वकील बनने के लिए कानून की शिक्षा लेते थे, जरूरी नहीं कि आप लॉ स्कूल में जाकर ही प्रशिक्षण लें, बल्कि आप किसी दूसरे वकील के साथ प्रशिक्षण लेते थे। और यही उनके साथ एडम्स, न्यूयॉर्क में हुआ, जहाँ उन्हें वकील बनने की शिक्षा मिली। और उन्होंने सोचा कि वे अपने जीवन के बाकी समय में भी यही करेंगे।

और यहाँ फ़िनी दाईं ओर है। मैं हमेशा फ़िनी की ये सारी तस्वीरें देखता हूँ जो आपके पास हैं। वह वहाँ है, सीधे आपकी ओर देख रहा है।

आप कानून की अदालत में उनके विरोधी बनना कैसे पसंद करेंगे, या आप चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी द्वारा पूछे जाने पर कैसे पसंद करेंगे? मेरा मतलब है, वह वहाँ है। इसलिए, जहाँ तक उसका सवाल है, वह अपने जीवन के बाकी समय में वकालत करने जा रहा है। हालाँकि, 1821 उनके जीवन में एक बदलाव की तारीख बन गई।

चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी ने खुद स्वीकार किया, अपनी जीवनी में और अपनी कहानी बताकर कहा कि चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी का धर्म परिवर्तन हो गया था। वह प्रभु के पास आया, उसके लिए यह बहुत ही नाटकीय परिवर्तन था। उसने वास्तव में खुद को प्रभु को समर्पित कर दिया।

वह एक कहानी सुनाता है कि एक दिन वह एडम्स, न्यूयॉर्क के पास जंगल से गुजर रहा था, और प्रभु उसके पास आए, उससे बात की, और उसने जवाब दिया। तो, चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी को एक नाटकीय रूपांतरण का अनुभव हुआ। उस अनुभव ने उसके जीवन की दिशा बदल दी क्योंकि चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी ने फैसला किया कि वह एक पादरी बनने जा रहा है और वह मंत्रालय में जाने वाला है।

अब, उनके पास कोई औपचारिक धर्मशास्त्रीय शिक्षा नहीं थी, लेकिन कानून की तरह, यह अक्सर मंत्रालय के साथ होता था; आप दूसरे मंत्री से सीखकर मंत्री बनते हैं। इसलिए, उन्होंने फैसला किया कि उन्हें प्रेस्बिटेरियन चर्च में नियुक्त किया जाएगा। और इसलिए, वह शहर में प्रेस्बिटेरियन मंत्री के घर गए और उस प्रेस्बिटेरियन मंत्री से धर्मशास्त्र और उपदेश आदि सीखा।

तो, एक तरह से गुरु-शिष्य का रिश्ता था जिसके द्वारा वह फिर एक मंत्री बन गया और वास्तव में प्रेस्बिटेरियन मंत्रालय में नियुक्त किया गया। तो यही वह है जो वह अपने जीवन के बाकी हिस्सों के लिए करने जा रहा है। दिलचस्प तरह का विवरण, मैं वास्तव में एडम्स, न्यूयॉर्क गया हूँ, और अनुभव एक दिलचस्प अनुभव था क्योंकि यह 200वीं वर्षगांठ थी, 1992, चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी के जन्म की 200वीं वर्षगांठ थी।

और लोगों ने फैसला किया कि यह बहुत बढ़िया था। हम उनकी 200वीं वर्षगांठ मनाएंगे। हम फिन्नी पर एक सम्मेलन आयोजित करेंगे, लेकिन हम इसे एडम्स, न्यूयॉर्क में मनाएंगे। हम इसे वहीं मनाएंगे जहाँ वे मंत्री थे। और इसलिए मुझे एक पेपर पढ़ने के लिए कहा गया।

आप चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी की सामाजिक मंत्रालय की समझ और इसी तरह की अन्य बातों पर अंतिम परीक्षा के लिए वह पेपर पढ़ रहे हैं। इसलिए, मुझे सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था। यह एक बहुत ही दिलचस्प सम्मेलन था, लेकिन हम तीन या चार दिनों के लिए एडम्स, न्यूयॉर्क में थे।

इसमें एक स्टॉपलाइट थी। मेरा मतलब है, बस इतना ही था, शहर के बीच में एक लाइट। शहर में सबसे रोमांचक बात शनिवार की सुबह हुई। फायरमैन ने पैनकेक ब्रेकफास्ट रखा था, जिसमें हम जा पाए।

तो, एडम्स, न्यूयॉर्क में पैनकेक ब्रेकफास्ट पर जाना काफी रोमांचक था। खैर, आपको एडम्स, न्यूयॉर्क बहुत पसंद आएगा। तो एडम्स, न्यूयॉर्क है।

तो, हम वहाँ थे। लेकिन यह बहुत दिलचस्प है। हम में से एक सत्र चर्च में था, जहाँ वह तब एक पादरी बनने के लिए अध्ययन कर रहा था।

इसलिए, हम उस चर्च में बैठे। दूसरे सत्र में, हमने पूरे शहर का दौरा किया, और हम वास्तव में उनके कानून कार्यालयों में नहीं गए, लेकिन हम दूसरी मंजिल पर उनके कानून कार्यालयों को देखने में सक्षम थे। अंतिम सत्रों में से एक दिलचस्प था क्योंकि अंतिम, और वहाँ एक बहुत अच्छा प्रतिनिधिमंडल था, लेकिन अंतिम सत्र जंगल के बाहरी हिस्से में एक खुली हवा में सत्र के रूप में आयोजित किया गया था जहाँ चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी का धर्मांतरण हुआ था, जहाँ वे प्रभु के पास आए थे।

और इसलिए, हमने वहाँ एक खुली हवा में सत्र आयोजित किया, एक सुंदर दिन, और चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी के रूपांतरण पर एक तरह से विचार किया। और फिर पूरे दिन हम फ़िनी के बारे में अखबार पढ़ते रहे और फ़िनी के बारे में चर्चा करते रहे। तो, मैं वास्तव में एडम्स, न्यूयॉर्क गया हूँ।

इट चीज़ों को आत्मसात करना एक बहुत बड़ा अनुभव था। इसलिए, एडम्स, न्यूयॉर्क, चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। फिर उन्होंने बहुत जल्दी जो किया वह यह था कि उन्होंने न केवल स्थानीय चर्चों में प्रचार करना शुरू किया, बल्कि पड़ोस के चर्चों में भी प्रचार करना शुरू किया।

वहाँ से, वह अन्य चर्चों में जाता है और इसी तरह आगे बढ़ता है। तो, वह जो करना शुरू करता है वह यह है कि वह एक भ्रमणशील पुनरुत्थानवादी मंत्रालय, या एक भ्रमणशील सुसमाचार मंत्रालय शुरू करता है, जो इस मंत्रालय में बहुत जल्दी सफल हो गया। अब, उस मंत्रालय के बारे में क्या? इस सुसमाचार मंत्रालय के बारे में क्या? आप, हम विद्वानों को इसे निर्धारित करने दे सकते हैं, और यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे हमें हल करना है।

फ़िनी- इट पुनरुत्थान के बारे में हम कक्षा में पहले ही जो प्रश्न उठा चुके हैं, वह यह है: क्या यह दूसरी महान जागृति की निरंतरता थी? क्या यह अभी भी दूसरी महान जागृति है जिसमें हम हैं? या दूसरी महान जागृति के परिणामों के बीच पर्याप्त अंतर था? तो यह वास्तव में तीसरी महान जागृति है। क्या फ़िनी -इट पुनरुत्थान अमेरिका में तीसरी महान जागृति है? या यह दूसरी महान जागृति की निरंतरता है? ऐसा मानने के लिए सभी तरह के कारण हैं।

मैं व्यक्तिगत रूप से मानता हूँ कि दूसरे महान जागरण और चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी के मंत्रालय की शुरुआत के बीच इतना अंतराल था कि मेरा मानना है कि इतना अंतराल था कि मैं इसे तीसरा महान जागरण कहूँगा, जिसे फ़िनी- इट रिवाइवल भी कहा जाता है। तो, इसने वास्तव में अमेरिका को तूफान में डाल दिया और यह बहुत, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था। ठीक है, एक और बात जो हम इस पहली बुलेट के साथ यहाँ नोट करना चाहते हैं वह यह है कि वह न केवल अमेरिका में प्रसिद्ध हुआ, बल्कि चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी ने 1857 से 1858 तक इंग्लैंड में दो साल का कार्यकाल भी पूरा किया।

वह इंग्लैंड चले गए, और इंग्लैंड में वे बहुत लोकप्रिय थे। जब वे अमेरिका वापस आए, तो उन्होंने वहां अपना पुनरुत्थानवादी मंत्रालय जारी रखा। ठीक है, तो हमने इस पर एक लेबल लगाया है।

हम इसे, हम उसे ट्रान्साटलांटिक पुनरुत्थानवादी कहते हैं, या हम इसे ट्रान्साटलांटिक पुनरुत्थानवाद कहते हैं। 19वीं सदी में जो हुआ, खास तौर पर, वह इंग्लैंड और अमेरिका के बीच ट्रान्साटलांटिक पुनरुत्थानवाद का एक जबरदस्त आंदोलन था। आपको बहुत से अमेरिकी प्रचारक इंग्लैंड जाते हुए, इंग्लैंड में पुनरुत्थान लाते हुए मिलेंगे।

हम इसे ड्वाइट एल. मूडी के साथ भी देखेंगे। लेकिन आपके पास ब्रिटिश प्रचारक भी हैं जो अमेरिका में आते हैं और अमेरिका में महान पुनरुत्थान करते हैं। इसलिए इस तरह का क्रॉस-द-पॉन्ड प्रकार का सुसमाचार प्रचार बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है, और हम इसे ट्रांसअटलांटिक पुनरुत्थानवाद के रूप में लेबल करते हैं।

अब, एक अर्थ में, ऐसा करने वाला पहला व्यक्ति प्रथम महान जागृति में था, और वह जॉर्ज व्हाइटफील्ड था। क्योंकि जॉर्ज व्हाइटफील्ड, ब्रिटिश, याद रखें, ब्रिटिश यहाँ अमेरिका में महान सुसमाचार सभाएँ आयोजित करने के लिए आए थे, लेकिन फिर छह बार ब्रिटेन वापस गए, याद रखें। उनकी मृत्यु यहीं उनकी अंतिम यात्रा पर हुई थी।

तो यह वास्तव में व्हाइटफील्ड के साथ शुरू हुआ। लेकिन फिर, जब आप 19वीं सदी में पहुँचते हैं, तो यह वास्तव में आगे बढ़ता है। इसलिए ट्रान्साटलांटिक पुनरुत्थानवाद वास्तव में, फिनी और मूडी जैसे लोगों की वजह से बहुत महत्वपूर्ण हो गया है।

ठीक है, चार्ल्स ग्रैंडिसन फिनी के बारे में एक और बात है जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए। चार्ल्स ग्रैंडिसन फिनी 1835 में, मैं इसे सबसे अंत में लिखूँगा, चार्ल्स ग्रैंडिसन फिनी, 1835, वे ओबरलिन कॉलेज के पहले प्रोफेसर बने। वे धर्मशास्त्र के प्रोफेसर थे।

और फिर, कुछ सालों बाद, मुझे शायद यहाँ तारीखें मिल गई होंगी। हाँ, 1851 से 1866 तक। तो, कुछ सालों के लिए, वह ओबरलिन कॉलेज के अध्यक्ष बन गए।

तो, हम पहले ही ओबरलिन कॉलेज का जिक्र कर चुके हैं। ओबरलिन में एक तरह से बहुत सी खासियतें हैं, बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जो इसे मानचित्र पर लाती हैं। और इसलिए, यह एक बहुत ही हॉटबेड जगह बन गई।

यह बहुत, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था। चार्ल्स फिनी एक राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध व्यक्ति थे, धर्मशास्त्र के प्रोफेसर और ओबरलिन कॉलेज के अध्यक्ष दोनों के रूप में। तो, आइए ओबरलिन कॉलेज के बारे में कुछ बातें बताते हैं और बताते हैं कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था।

जैसा कि मैंने कहा, उन्होंने 1835 में इसकी स्थापना के समय ही इसकी शुरुआत कर दी थी। इसलिए, वे अपने जीवन के अंत तक इसके साथ जुड़े रहे। लेकिन ठीक है, सबसे पहले, हम पहले ही यह कह चुके हैं।

इसलिए, हम याद रखना चाहते हैं कि ओबरलिन कॉलेज की स्थापना एक उन्मूलनवादी संस्था के रूप में की गई थी। इसकी स्थापना एक गुलामी विरोधी संस्था के रूप में की गई थी, और इसकी स्थापना इसी उद्देश्य से की गई थी। उन्मूलनवादी सिद्धांत को पढ़ाना और उसका प्रचार करना कॉलेज के मिशन का हिस्सा था।

यह अमेरिका का पहला कॉलेज है जिसकी स्थापना दास प्रथा के उन्मूलन के मिशन के साथ की गई थी, जो कि संस्थान की स्थापना का एक कारण है। इसलिए, यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण था। अब यह आपको चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी के बारे में कुछ बताता है।

इससे पता चलता है कि फ़िनी एक उन्मूलनवादी थे। फ़िनी एक बहुत ही कट्टर उन्मूलनवादी, बहुत ही कट्टर उन्मूलनवादी, गुलामी विरोधी व्यक्ति थे। वह उन्मूलनवादी आंदोलन में भी बहुत ज्यादा शामिल थे।

और, बेशक, वह ओबरलिन को उन्मूलनवाद के लिए एक तरह के मुख्यालय के रूप में इस्तेमाल करने में सक्षम था। तो यह एक ऐसी चीज है जिसके लिए ओबरलिन जाना जाता है, और यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। और जब हम फिने के बारे में बात करेंगे तो हम यह बात अक्सर कहेंगे।

हम यह बात बार-बार कहेंगे। तो शायद यह पहली बार हो, लेकिन हम इसे कई बार कहेंगे। चार्ल्स ग्रैंडिसन फिनी के साथ, सुसमाचार का प्रचार करने और गुलामी पर सामाजिक रुख अपनाने के बीच कोई विरोधाभास नहीं था।

दूसरे शब्दों में, जहाँ तक उनका सवाल है, वे दो अलग-अलग दुनिया नहीं हैं, और उन्हें अलग नहीं किया जाना चाहिए। जहाँ तक उनका सवाल है, सुसमाचार का प्रचार करना उनके उन्मूलनवाद का आधार था। इसलिए, फिनी के लिए सामाजिक मंत्रालय और सुसमाचार का प्रचार करना एक ही बात है।

वे कभी भी उससे अलग नहीं होते। और मैं उस लेख में यह तर्क देने की कोशिश करता हूँ जिसे आप फ़िनी पर पढ़ रहे हैं, लेकिन वे कभी भी उससे अलग नहीं हुए। 100 साल बाद इंजीलवाद की समस्या का एक हिस्सा यह है कि वे सुसमाचार प्रचार को सामाजिक मंत्रालय से अलग करते हैं, और सुसमाचार प्रचार में सामाजिक मंत्रालय कम हो जाता है।

लोग यह महसूस करते हुए आए कि आप दोनों काम नहीं कर सकते। आप सुसमाचार का प्रचार और किसी तरह का सामाजिक मंत्रालय दोनों नहीं कर सकते। आपको इन दोनों चीजों को जोड़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

खैर, चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी के लिए ऐसा नहीं था। उन्हें यकीन था कि सुसमाचार का प्रचार करने और सुसमाचार की पूर्णता का प्रचार करने और सामाजिक मंत्रालय को शामिल करने के बीच बहुत सावधानी से सामंजस्य है। ठीक है, तो यह ओबरलिन है, ओबरलिन के बारे में पहली बात।

ओबरलिन के बारे में दूसरी बात यह है कि यह अमेरिका में पहला सह-शिक्षा संस्थान बन गया। महिलाओं को स्वीकार करने वाला पहला स्थान, महिलाओं को स्वीकार करने वाला पहला कॉलेज ओबरलिन था। इसलिए, इसका एक अलग स्थान है... ओह, इसके लिए माफ़ी चाहता हूँ।

यह सब भूल जाओ। मैं बस तुम्हें यहाँ एक नाम देना चाहता हूँ। तो, भूल जाओ, भूल जाओ, भूल जाओ, भूल जाओ, और चलो शुरू करते हैं।

तो वह ओबरलिन कॉलेज से डिग्री प्राप्त करने वाली पहली महिला थीं और अमेरिकी ईसाई धर्म में एक बहुत ही महत्वपूर्ण महिला थीं। अगर आप में से कोई भी उस पेपर को करने की सोच रहा है, तो आप एंटोनेट ब्राउन पर पेपर कर सकते हैं। तो वह ओबरलिन कॉलेज से स्नातक होने वाली पहली महिला थीं, और उन्होंने धर्मशास्त्र में डिग्री प्राप्त की।

तो, एंटोनेट ब्राउन, ओबरलिन कॉलेज, सह-शिक्षा प्राप्त कर रही है, और यहाँ वह धर्मशास्त्र में डिग्री प्राप्त कर रही है। अब, जब संगठित चर्च की बात आती है तो यह अभी भी काफी हद तक पुरुषों की दुनिया थी। और इसलिए, उसे वास्तव में समन्वय प्राप्त करने में काफी समय लगा, भले ही उसने ओबरलिन से धर्मशास्त्र में डिग्री प्राप्त की हो।

अंततः उसे नियुक्त किया गया, लेकिन उसे यूनिटेरियन चर्च में नियुक्त किया गया क्योंकि यूनिटेरियन महिलाओं के नियुक्ति में विश्वास करते थे, जबकि प्रेस्बिटेरियन या बैपटिस्ट जैसे अधिक मुख्यधारा के चर्चों ने अभी तक महिलाओं को नियुक्त नहीं किया था। इसलिए वह नियुक्ति लेती है और अपनी मृत्यु तक यूनिटेरियन पादरी बनी रहती है। यह एंटोनेट ब्राउन की तस्वीर है।

लेकिन यह सब ओबरलिन कॉलेज की वजह से है। तो, ओबरलिन कॉलेज अमेरिका में पहला उन्मूलनवादी संस्थान और अमेरिका में पहला सह-शिक्षा संस्थान था। ठीक है, यहाँ ओबरलिन कॉलेज के बारे में कुछ और बातें हैं। ओबरलिन कॉलेज भी एक कॉलेज था, शायद नंबर तीन की तरह का भेद, लेकिन यह एक ऐसा कॉलेज भी था जो पुनरुत्थानवाद का प्रचार और शिक्षण करता था।

और कुछ ही मिनटों में, हम पुनरुत्थानवाद पर उनकी प्रसिद्ध पुस्तक देखने जा रहे हैं। लेकिन इसमें पुनरुत्थानवाद का धार्मिक रूप से प्रचार और शिक्षण किया गया था। इसलिए, ओबरलिन कॉलेज में धार्मिक शिक्षण का एक हिस्सा पुनरुत्थानवाद का धर्मशास्त्र था।

अब, आपको 19वीं सदी में ऐसे बहुत से कॉलेज नहीं मिलेंगे जो पुनरुत्थानवाद के बारे में पढ़ाते हों, जो शायद कुछ सेमिनारियों में होता होगा, लेकिन ओबरलिन कॉलेज इसके लिए जाना जाता था। तो यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। चौथी चीज़ जिसके लिए ओबरलिन कॉलेज जाना जाता था, जो कि दिलचस्प है, और चार्ल्स ग्रैडिसन फ़िनी भी वास्तव में इसके लिए जाने जाते थे, और वह था पवित्रीकरण या पवित्रता के सिद्धांत के लिए।

ओबरलिन कॉलेज एक पवित्रता संस्थान था, एक पवित्रीकरण संस्थान। चार्ल्स ग्रैंडिसन फिनी ने पवित्रीकरण के सिद्धांत का प्रचार किया। ठीक है, तो पवित्रीकरण से हमारा क्या मतलब है? सबसे पहले, यह वेस्ले से आता है।

यह 18वीं सदी का वेस्लेयन पवित्रीकरण है। वेस्ले ने पवित्रीकरण का सिद्धांत बाइबल से लिया है। तो, पवित्रीकरण पर बस कुछ मिनट बात करने के लिए।

वेस्ली ने सिखाया कि ईसाई जीवन में पहला कदम, ईसाई और आस्तिक बनने का पहला कदम, मोक्ष है, औचित्य का कदम। यह पहला कदम है। लेकिन ईसाई जीवन यहीं समाप्त नहीं होता।

इस जीवन में तीर्थयात्रा यहीं समाप्त नहीं होती। क्योंकि एक दूसरा कदम भी है जो ईसाई उठा सकता है, और वह कदम पवित्रता या पवित्रता का कदम है। इसलिए, जॉन वेस्ली ने सिखाया कि ईसाई तीर्थयात्रा में ये दो महान कदम थे।

अब, पवित्रीकरण या पवित्रता का दूसरा चरण तब शुरू होता है जब कोई व्यक्ति न्यायसंगत ठहराया जाता है या जब कोई बचा लिया जाता है। तभी इसकी शुरुआत होती है। और जॉन वेस्ले के लिए, इसे प्रारंभिक पवित्रीकरण कहा जाता है।

यहीं से इसकी शुरुआत होती है। लेकिन फिर वेस्ले ने पवित्रीकरण और पवित्रता को भी एक प्रक्रिया के रूप में सिखाया। यह प्रक्रिया है कि व्यक्ति मसीह में बढ़ता रहे।

व्यक्ति मसीह की छवि के अनुरूप ढलता रहता है ताकि व्यक्ति, व्यक्ति और आस्तिक को इस जीवन में पवित्र बनाया जा सके। तो यह बहुत वेस्लेयन है, बहुत जॉन वेस्ले। और वेस्ले, जब उन्होंने पवित्रीकरण के बारे में बात की, तो इस बात पर जोर दिया कि आस्तिक पवित्र है, और यह हृदय की पवित्रता से प्रदर्शित होता है।

तो यह एक शुद्ध हृदय द्वारा प्रदर्शित होता है। इसलिए, वेस्ले ने अक्सर मैथ्यू अध्याय 22 का हवाला दिया था, परमेश्वर से प्रेम करो और अपने पड़ोसी से प्रेम करो। अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से परमेश्वर से प्रेम करो, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो, मैथ्यू अध्याय 22।

उनके लिए, पवित्रता का सार यही है। ठीक है, संक्षेप में, चार्ल्स ग्रैंडिसन फिनी ने इस पर बात की। तो, चार्ल्स फिनी ने वेस्ले को पढ़ा।

उन्होंने पवित्रता के सिद्धांत और पवित्रीकरण के सिद्धांत को अपनाया, और उन्होंने विश्वासी के हृदय में अनुग्रह के दो कार्यों के सिद्धांत का प्रचार करना शुरू किया। अब, फिनी और वेस्ली के बीच थोड़ा सा अंतर है। फिनी ने पवित्रीकरण को सशक्तिकरण के रूप में महत्व दिया।

कि आप पवित्र हैं, आपको ईश्वर द्वारा सुसमाचार का प्रचार करने या सुसमाचार को जीने के लिए सशक्त बनाया गया है। इसलिए, उन्होंने कहा कि उनका उच्चारण वेस्ली के उच्चारण से थोड़ा अलग था। वेस्ली का उच्चारण हृदय की पवित्रता के बारे में अधिक था।

विश्वासी का हृदय शुद्ध होता है। फिन्नी का जोर सेवकाई के लिए सशक्तिकरण पर था। पवित्र आत्मा विश्वासी पर आती है, विश्वासी को पवित्र करती है, और विश्वासी को उस सेवकाई के लिए सशक्त बनाती है जो परमेश्वर ने उसे दी है।

इसलिए, उन्होंने पवित्रीकरण के सिद्धांत का प्रचार किया और ओबरलिन इसके लिए प्रसिद्ध हो गया। इसलिए, मुझे ओबरलिन कॉलेज की एक तस्वीर मिली। आज ओबरलिन कॉलेज के परिसर में आपको ऐसा होते हुए शायद ही देखने को मिले।

इसे देखना थोड़ा मुश्किल है। मुझे नहीं पता कि आप उस साइन को पढ़ सकते हैं या नहीं। मेरा मतलब है, यहाँ ओबरलिन कॉलेज है, और चार्ल्स ग्रैडिसन फ़िन्नी ओबरलिन कॉलेज के ठीक बीच में एक तंबू लगाते थे, और चार्ल्स ग्रैडिसन फ़िन्नी उस तंबू में पवित्रता की बैठकें करते थे।

आप देख सकते हैं कि साइनबोर्ड पर क्या लिखा है: प्रभु के लिए पवित्रता। वह ओबरलिन कॉलेज के परिसर में पवित्रता के बाइबिल सिद्धांत को पढ़ाने और प्रचार करने के लिए बैठकें आयोजित करता था। आज ओबरलिन कॉलेज के परिसर में ऐसा होने की संभावना नहीं है।

अगर आपने ओबरलिन में किसी काम के लिए दाखिला लिया है, तो इंतज़ार न करें। किसी से यह न पूछें कि वे कब तंबू लगाने जा रहे हैं या हम कब पवित्रता की बैठकें करने जा रहे हैं। हो सकता है कि उन्हें यह भी पता न हो कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं क्योंकि आज ओबरलिन में इसका कोई अवशेष नहीं बचा है। लेकिन ओबरलिन की शुरुआत एक पूर्णतावादी संस्थान के रूप में हुई थी।

तो, ठीक है, ओबरलिन कॉलेज के बारे में एक और बात है। कॉलेज के बारे में ये सभी बातें: यह एक महत्वपूर्ण स्थान है, और फ़िन्नी एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। हालाँकि, ओबरलिन कॉलेज के बारे में एक और बात यह थी कि यह स्वास्थ्य से संबंधित था।

इसने स्वास्थ्य के मामले सिखाए और क्या खाना चाहिए और क्या व्यायाम करना चाहिए इत्यादि, लेकिन स्वास्थ्य, स्वस्थ व्यक्ति। और इसलिए, यह एक ऐसी जगह बन गई जो ओबरलिन कॉलेज के जीवन का हिस्सा बन गई। इसलिए, ओबरलिन कॉलेज बहुत सी चीज़ों के लिए जाना जाता है, और मुझे नहीं पता कि आप सभी ने ओबरलिन कॉलेज के बारे में सुना है या नहीं।

आपने शायद इसके बारे में सुना होगा, लेकिन हो सकता है कि आप ओबरलिन कॉलेज की पृष्ठभूमि को न पहचानें या महसूस न करें। यह अमेरिकी ईसाई धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और अमेरिकी ईसाई धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ठीक है, चार्ल्स ग्रैडिसन फ़िन्नी के बारे में एक और बात, और यह वह चीज़ है जिसके लिए वह शायद सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं, और वह है उनकी सभी पुनरुद्धार बैठकें।

ठीक है, फ़िन्नी ने एक किताब लिखी, जो बेस्टसेलर, ब्लॉकबस्टर है। क्या अब तक कोई सवाल है कि मैं उनकी किताब में कहाँ हूँ? और फिर हमने जो कुछ भी कहा है, वह एक तरह से उस चीज़ की पहचान बन गया है जिसे हम इंजीलवाद कहेंगे, या वे इंजीलवाद के मापदंड बन गए हैं। हाँ।

हाँ। हाँ, उसके जीवन में एक विकास हुआ था जहाँ वह यूनिटेरियन धर्मशास्त्र में विश्वास करती थी, लेकिन यह एक अच्छा सवाल है क्योंकि धर्मशास्त्र में विश्वास करने के लिए थोड़ा दबाव था क्योंकि वह उनके साथ नियुक्त होने जा रही थी। लेकिन मुझे लगता है कि वह वास्तव में इस निष्कर्ष पर पहुँच गई थी कि यूनिटेरियनवाद सही था इससे पहले कि वह नियुक्त हो।

हाँ। वैसे, एंटोनेट ब्राउन, एक और नाम है, जिसे याद रखना चाहिए। हम अभी जहाँ हैं, वहाँ तक कुछ और।

तो, आपको यह समझ आ गया होगा कि फ़िनी कितने महत्वपूर्ण हैं और ओबरलिन कॉलेज कितना महत्वपूर्ण है। ठीक है, उन्होंने एक ब्लॉकबस्टर किताब लिखी जिसे हम आज उसी नाम से पुकारेंगे। इसका नाम था धर्म के पुनरुत्थान पर व्याख्यान।

अमेरिका और इंग्लैंड में लोग इस किताब को उठा रहे थे, इसे पढ़ रहे थे और इसे आत्मसात कर रहे थे, और उन्हें लगा कि यह बहुत बढ़िया है। मैंने जिन लोगों की जीवनी लिखी है, उनमें से एक कैथरीन बूथ हैं। कैथरीन बूथ ने यह किताब पढ़ी, और उन्होंने हमेशा लोगों को फ़िनी को पढ़ने की सलाह दी।

उन्होंने अन्य पुस्तकें भी लिखीं, लेकिन आपको चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी को अवश्य पढ़ना चाहिए; यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप फिन्नी को पढ़ें। इसलिए वह हमेशा लोगों को यह सलाह देती थी कि वे फिन्नी को अवश्य पढ़ें। खैर, अगर कोई एक पुस्तक है जिसे आप फिन्नी द्वारा पढ़ना चाहेंगे, तो वह थी धर्म के पुनरुद्धार पर व्याख्यान।

अब, इस पुस्तक में उन्होंने यह बताया है कि किस तरह से पुनरुत्थान का संचालन किया जाए। वह लोगों को यह बताता है कि प्रभु के लिए किस तरह से पुनरुत्थान का संचालन किया जाए। और यह पुस्तक पुनरुत्थानवाद के मामले में एक ब्लॉकबस्टर और गेम चेंजर बन जाती है।

तो, पुस्तक में पुनरुत्थानवाद में नए उपायों को रेखांकित किया गया है। पुनरुत्थानवाद को कैसे लाया जाए और पुनरुत्थानवाद के धर्मशास्त्र के संदर्भ में ये नई चीजें हैं। इसलिए हम इनमें से कुछ नए उपायों के बारे में बात करने जा रहे हैं क्योंकि चार्ल्स ग्रैंडिसन, फिन्नी को इसी के लिए याद किया जाता है, साथ ही उन अन्य चीजों के लिए भी जिनके बारे में हमने बात की है।

और यह 19वीं सदी में इंजीलवाद को चिह्नित करेगा, 20वीं सदी में आएगा, और यहाँ तक कि 21वीं सदी में भी। ठीक है, यहाँ पुनरुत्थानवाद के नए उपाय हैं। और मुझे नहीं पता कि मैंने इसे क्यों रखा, चाहे आप इसे सुन सकें या नहीं, लेकिन मेरे पास प्रत्येक के लिए ताली है।

मुझे नहीं पता कि मुझमें क्या आ गया। क्या मैं सिर्फ़ आवाज़ के साथ प्रयोग कर रहा था या ऐसा ही कुछ? मुझे इस बारे में थोड़ी उलझन है, लेकिन अब मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि इससे कैसे छुटकारा पाया जाए। तो, आप ताली बजाने जा रहे हैं।

तो, आपको खुद ताली बजाने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन ठीक है, पहला वाला बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है। आप इसे अपने जीवनकाल में फिर से देखेंगे।

मैं इसकी गारंटी देता हूँ। पुनरुत्थान के लिए परिस्थितियाँ तैयार करना, एक धर्मशास्त्र जो अब कैल्विनवाद से दूर जा रहा है। चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी, अपने पुनरुत्थान के तरीकों से, पुनरुत्थानवाद के धर्मशास्त्र को कैल्विनवाद से दूर, पहले महान जागरण से दूर, और उत्तर में दूसरे महान जागरण के धर्मशास्त्र से दूर ले जा रहे हैं।

दक्षिण में दूसरी महान जागृति का धर्मशास्त्र इतना नहीं है, लेकिन निश्चित रूप से उत्तर में है। क्योंकि उत्तर में पहली महान जागृति और दूसरी महान जागृति में, पुनरुत्थानवाद ईश्वर के समय पर आता है। आप पुनरुत्थान के लिए प्रार्थना करते हैं, लेकिन आप पुनरुत्थान के आने का इंतज़ार करते हैं क्योंकि ईश्वर, अपने समय और अपनी इच्छा के अनुसार, पुनरुत्थान लाने जा रहा है।

तो, वे सभी पुनरुत्थान, वे चार जिनके बारे में हमने पहले महान जागरण में बात की थी, और दूसरे महान जागरण में टिमोथी ड्वाइट जैसे लोग अच्छे कैल्विनिस्ट होते जो पुनरुत्थान होने का इंतज़ार करते और ईश्वर पर भरोसा करते। जब ऐसा होता है, तो हम इस काम में मदद करने के लिए यहाँ मौजूद रहना चाहते हैं। फ़िनी के साथ ऐसा नहीं है।

फ़िनी ज़्यादा आर्मीनियन हैं। उनके पास ज़्यादा स्वतंत्र इच्छाशक्ति है। वे कहते हैं, नहीं, आपको जो करना है, वह यह है कि आपको पुनरुत्थान के लिए सभी परिस्थितियाँ तैयार करनी होंगी।

इसलिए, मनुष्य को अपना काम करना होगा। और जब वे अपना काम कर लेंगे, तब परमेश्वर पुनःजागृति लाएगा। इसलिए, धर्मशास्त्र पुनःजागृति की कैल्विनवादी समझ से हटकर पुनःजागृति की अधिक आर्मीनियन तरह की स्वतंत्र इच्छा वाली समझ की ओर बढ़ रहा है।

बाकी सब कुछ उसी से निकलता है। लेकिन वह धार्मिक आधार वास्तव में महत्वपूर्ण है। ठीक है।

तो दूसरी बात, उन्होंने धार्मिक सेवाओं के लिए अनुपयुक्त घंटे कहे। धार्मिक सेवाओं के लिए अनुपयुक्त घंटे। धार्मिक सेवाओं के लिए अनुपयुक्त घंटों से हमारा क्या मतलब है? खैर, हमारा मतलब यह है कि उनके ज़्यादातर पुनरुत्थान बोस्टन, न्यूयॉर्क, अल्बानी और ऐसे ही दूसरे शहरों में हुए।

इसलिए, ज़्यादातर पुनरुत्थान शहरों में हुए, और शहर के लोगों के पास ग्रामीण इलाकों के लोगों से अलग घंटे और अन्य चीज़ें थीं। इसलिए धार्मिक सेवाओं के लिए पुनरुत्थानवाद के लिए अनुपयुक्त घंटों का मतलब है कि आपके पास ऐसे घंटे हैं जो शहर में रहने वाले लोगों के लिए सबसे ज़्यादा मददगार हैं। इसका मतलब हो सकता है कि दोपहर के समय पुनरुत्थान सेवाएँ करना जब शहर के लोगों को दोपहर के भोजन के लिए एक या दो घंटे के लिए कारखानों से बाहर जाने दिया जाता है।

या इसका मतलब यह हो सकता है कि शाम को लोगों के काम से छुट्टी के बाद पुनरुद्धार सेवाएँ की जाएँ, और काम से घर लौटते समय वे पुनरुद्धार सभा में रुकें। लेकिन बेमौसम घंटों का

मतलब था कि आप शहरी संस्कृति के अनुसार पुनरुद्धार के लिए घंटों को तय करें। तो यह नया था।

किसी ने कभी ऐसा नहीं किया, हम उन शब्दों में नहीं सोच रहे हैं। तो यह एक और नया उपाय था। ठीक है।

एक और नया उपाय है जिसे उन्होंने लंबी बैठकें कहा। एक लेखक ने कहा कि लंबी बैठकों से तात्पर्य शहर में लाई गई शिविर बैठक से है। लंबी बैठकों से उनका तात्पर्य द्वितीय महान जागृति में दक्षिण में होने वाली बैठकों से था।

उनका मतलब था कि एक बार जब आप शाम को सात बजे की मीटिंग के लिए इकट्ठे होते हैं, तो वह मीटिंग आठ बजे, नौ बजे, दस बजे, ग्यारह बजे, आधी रात और इसी तरह आगे भी चल सकती है। तो लंबी बैठकें दक्षिण में पुरानी कैंप मीटिंग की तरह हैं, लेकिन अब आप उन लंबी बैठकों को शहर में ला रहे हैं। तो लंबी बैठकों का मतलब है कि आप घड़ी नहीं देख रहे हैं।

आप बस लोगों के जीवन में परमेश्वर के कार्य के होने का इंतज़ार कर रहे हैं, इसलिए जब तक आपको इसकी ज़रूरत है तब तक आप मीटिंग करते हैं। तो, यह कुछ-कुछ वैसा ही है जैसा दक्षिण में शिविर बैठकों में हुआ था। वह इसे शहर में लेकर आया है।

इसलिए बैठकें लंबी चलती थीं। एक और तरीका था बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल। चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी ने लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बोलचाल की भाषा, लोगों की भाषा का इस्तेमाल किया।

इस मामले में वे शायद व्हाइटफील्ड की तरह ही थे। व्हाइटफील्ड ने भी लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल किया। उच्चस्तरीय विश्वविद्यालय भाषा का इस्तेमाल न करें, बल्कि लोगों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करें।

तो, वह ऐसा ही करता था। कभी-कभी, भाषा बहुत कठोर होती थी, और मुझे वह तस्वीर भी याद है जो हमने पहले फिन्नी की दिखाई थी। कभी-कभी, भाषा मण्डली के लिए बहुत सीधी होती है।

वह मण्डली को एक वकील की तरह देख रहा है, और वह एक वकील की तरह मामले पर बहस कर रहा है, एक वकील की तरह बाइबिल के मामले पर। और वह आपको उन तीखी निगाहों से देख रहा है, आप जानते हैं, और सुसमाचार सामने आ रहा है। तो, कौन उसका विरोध कर सकता है? और वैसे, वह आमतौर पर लगभग दो घंटे तक प्रचार करता था।

तो, अगर आप 20 मिनट के उपदेशों के आदी हैं, तो नहीं, आप फिन्नी को सुनने जाइए; आपको दो घंटे का अच्छा उपदेश सुनने को मिलेगा। तो, वह कुछ घंटों तक सुसमाचार के मामले पर बहस कर रहे हैं।

तो बोलचाल की भाषा, बोलचाल की भाषा का उपयोग। यहाँ कुछ ऐसा है जिसका मैं सुझाव नहीं दे रहा हूँ। चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी इसे पुनरुत्थानवाद में एक नए उपाय के रूप में उपयोग करते हैं।

फिर, प्रार्थनाओं और धर्मोपदेशों में व्यक्तियों का विशिष्ट नामकरण किया जाता है। इसलिए, अगर उसे पता चला कि शहर में ऐसे लोग हैं जो विशेष रूप से पापी हैं, विशेष रूप से जाने-माने पापी और निंदक और बदमाश वगैरह। खैर, इन लोगों तक पहुँचने का एक तरीका है।

हम अपनी प्रार्थनाओं और धर्मोपदेशों में इन लोगों का नाम लेंगे। और अगर वे सभा में मौजूद होते तो वह धर्मोपदेश के दौरान भी उनका नाम लेते। तो, आप जानते हैं, वे कल्पना करेंगे कि फिन्नी धर्मोपदेश के दौरान सीधे आपकी ओर देख रहा है और आपको एक दुष्ट के रूप में नाम दे रहा है।

ओह, मेरी बात। तो, मुझे यकीन नहीं है कि यह सभी दुनियाओं में सबसे अच्छा है, लेकिन किसी भी मामले में, उसने सोचा कि यह करना एक अच्छी बात थी। उन सभी बदमाशों का ख्याल रखना।

फिर, पूछताछ बैठकें होंगी, और धर्मोपदेश के बाद पूछताछ बैठकें होंगी। आप जानते हैं, लोगों के पास ईसाई सुसमाचार और अन्य बातों के बारे में प्रश्न हो सकते हैं। इसलिए, पूछताछ बैठकें होंगी, और ऐसे लोग होंगे जिन्हें लोगों से उनकी आत्मा, मोक्ष और अन्य बातों के बारे में बात करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा।

इसलिए, पूछताछ बैठकें महत्वपूर्ण थीं। जिसे चिंताजनक बेंच कहा जाता है उसका उपयोग। यदि आप नहीं हैं, यदि आप पुनरुत्थानवाद के बारे में कुछ नहीं जानते हैं, तो मुझे यह देखने में दिलचस्पी होगी कि क्या यह आप में से किसी को परिचित लगता है।

ठीक है, चिंतित बेंच क्या है? अगर वह चर्च में प्रचार कर रहे होते, जैसा कि वह अक्सर करते थे, तो पहली पंक्ति, उदाहरण के लिए, चर्च में पहली बेंच, बेंच की एक पंक्ति को चिंतित बेंच कहा जाता था। और फिर जो लोग सुसमाचार के बारे में पूछताछ करने जा रहे थे और उनके उपदेश के बाद, वे नीचे आते और वे इस चिंतित बेंच पर बैठते। वे यहाँ इस जगह पर बैठते, और फिर लोग आते और बैठते, और वे उनके साथ उनके ईसाई अनुभव और प्रभु को जानने आदि के बारे में बात करते।

अब, फिन्नी के पास एक विचार था, हालाँकि। और उसका विचार था कि इन बेंचों, चिंतित बेंच को ले लो, और उन्हें घुमाओ ताकि वह चिंतित बेंच का उपयोग लोगों के आने और घुटने टेकने के लिए एक जगह के रूप में करना शुरू कर दे। तो, लोग आगे आएंगे, और चिंतित बेंच पर बैठने के बजाय, वे चिंतित बेंच या दया सीट पर घुटने टेकेंगे, और लोग आएंगे, और वे उनके साथ प्रार्थना करेंगे और इसी तरह और पूछताछ और प्रार्थना करेंगे और उन्हें प्रभु के पास ले जाएंगे और इसी तरह।

अब, मैं बस उत्सुक हूँ, क्या यह इस कमरे में किसी को भी परिचित लगता है? क्या कोई, क्या आप में से कोई ऐसी परंपरा से आता है जहाँ सेवा के अंत में सेवा में एक जगह होती है, जहाँ लोग आकर घुटने टेक सकते हैं और प्रार्थना कर सकते हैं, आप इसे चिंताजनक बेंच नहीं कह सकते,

लेकिन शायद एक दया सीट कह सकते हैं। क्या कोई किसी से जुड़ता है? कुछ लोग इससे जुड़ते हैं। यदि आप पेंटेकोस्टल परंपरा से आते हैं, तो आपने निश्चित रूप से इसे देखा होगा।

या यदि आप वेस्लेयन पवित्रता परंपरा से आते हैं, तो आपने निश्चित रूप से यह देखा होगा: चिंतित बेंच या दया सीट या पश्चाताप का रूप या प्रार्थना का स्थान, आप इसे जो भी कहते हैं। तो, आप इससे आश्चर्यचकित नहीं होंगे। यदि आप उस परंपरा से नहीं आते हैं, तो आप शायद थोड़ा आश्चर्यचकित हो सकते हैं यदि आप शायद पेंटेकोस्टल सेवा या वेस्लेयन पवित्रता सेवा में गए हों क्योंकि बहुत संभावना है कि सेवा के अंत में, उपदेश के अंत में, आगे आने और घुटने टेकने और प्रार्थना करने आदि के लिए आह्वान किया जाता है।

तो, ठीक है, हम कौन जानते हैं कि यह सब किसने शुरू किया? कुछ मेथोडिस्ट इसका इस्तेमाल कर रहे थे, लेकिन यह फिने था जिसने इसे शुरू किया। यह एक फिनेइट था पुनरुत्थानवादी, एक तरह का नया उपाय। तो, यह फिनी का तरीका है, आप जानते हैं, उन लोगों से निपटने का जो प्रभु के बारे में सीखना चाहते हैं और इसी तरह।

तो, चिंतित बेंच का उपयोग। मैं आपको विराम देने से पहले इसे समाप्त करूंगा और महिलाओं द्वारा सार्वजनिक रूप से गवाही देने और प्रार्थना करने का उपयोग। यह नया है।

अब, वेस्ली ने इसका इस्तेमाल किया है, लेकिन फिन्नी भी इसका इस्तेमाल करते हैं, और यह फिन्नी की बैठकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। इन महिलाओं को अभी तक नियुक्त नहीं किया गया है क्योंकि संप्रदाय महिलाओं को नियुक्त नहीं कर रहे हैं, लेकिन फिन्नी को यकीन था कि प्रचार और प्रार्थना के मामले में महिलाओं को सार्वजनिक बैठकों में जगह मिलनी चाहिए। अब, यह कई, कई अन्य ईसाइयों के लिए एक झटका था क्योंकि उन्होंने पहले कभी ऐसा नहीं देखा था।

उन्होंने पहले कभी ऐसा नहीं देखा था; आप महिलाओं को प्रार्थना करने, प्रार्थना करने और सार्वजनिक रूप से बोलने की अनुमति देकर क्या कर रहे हैं? यह नया उपाय बहुत से लोगों के लिए वास्तव में कठिन था, लेकिन इन्हें उनके पुनरुत्थानवाद के नए उपाय कहा जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

यहाँ एक और है। और वह है कार्यकर्ताओं के समूह जो घरों का दौरा करते हैं। कार्यकर्ताओं के समूह पुनरुद्धार सभाओं के बाद घरों में जाते थे, और लोग अपना नाम और पता आदि बताते थे।

और उसके बाद अगले दिन लोग घरों में जाकर उन लोगों से मिलते थे जो प्रभु के पास आए थे और अपने परिवारों से बात करते थे और इसी तरह की अन्य बातें करते थे। आप इसे पुनरुत्थानवाद के एक साधन के रूप में जानते होंगे, लेकिन यह फिने और फिनेइट पुनरुत्थान के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण नया उपाय था। इसलिए, पुनरुत्थानवाद में नए उपाय, पहला धार्मिक, बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि अब अमेरिकी ईसाई धर्म में कैल्विनवाद से आर्मिनियनवाद की ओर एक बड़ा धार्मिक परिवर्तन हो रहा है।

, और फिर ये सारी चीजें पुनरुत्थान के दौरान हुईं। तो, मुझे बस एक मिनट के लिए यहीं रुकना चाहिए। पुनरुत्थानवाद के नए उपाय धर्म के पुनरुत्थान पर व्याख्यान हैं।

क्या नए उपायों, उनके व्याख्यानों, प्रभाव के बारे में कोई सवाल हैं? यहाँ कोई सवाल है? तो हाँ, वे उनकी किताब का हिस्सा हैं। हाँ। किताब का हिस्सा।

तो, आप, आप, जब भी आप किताब पढ़ेंगे, तो आप ये देखेंगे। हाँ। मैंने किताब से सबसे महत्वपूर्ण बातें चुनी हैं।

हाँ। कुछ और। मुझे सोमवार की सुबह तुम्हें छुट्टी देनी है।

तो पाँच सेकंड का ब्रेक। हम यहाँ से आगे की यात्रा पर जा रहे हैं। ठीक है।

हम अभी भी चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी के बारे में बात कर रहे हैं। ठीक है। अब, चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी, हम अभी भी उसके साथ हैं।

और फिर हम जो कर रहे हैं वह यह है कि हम उनके जीवन और मंत्रालय को देखकर इंजीलवाद की विशेषताओं को समझ रहे हैं। हम जीवनी के आधार पर यह पता लगा रहे हैं कि इंजीलवाद नामक यह चीज़ क्या है। तो आप इस मामले में मेरे साथ हैं।

तो, ठीक है। चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी के बारे में एक और बात। चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी और अन्य लोगों ने स्वैच्छिक समाज नामक संस्थाएँ शुरू कीं।

तो, इन पुनरुत्थानों से स्वैच्छिक समाजों का उदय हुआ। तो, मैं स्वैच्छिक समाजों के बारे में बात करूँगा, जो कि हम जिसे इंजीलवाद कहते हैं उसकी विशेषता बन गए। तो, ठीक है।

स्वैच्छिक समाजों के बारे में पहली बात मिशनो के लिए एक साथ आना हो सकती है, उदाहरण के लिए, क्योंकि 19वीं सदी में स्वैच्छिक समाजों का यह सबसे बड़ा पहलू था। यह अन्य चीज़ों के लिए एक साथ आना हो सकता है, लेकिन मिशनो के लिए एक साथ आना, चाहे वह घरेलू मिशन हो या विदेशी मिशन, वास्तव में महत्वपूर्ण था। ठीक है।

स्वैच्छिक समितियाँ। ठीक है। स्वैच्छिक समितियों के बारे में पहली बात जो वास्तव में मददगार थी, वह यह थी कि उन्होंने प्रोटेस्टेंटों को एक साथ लाया।

प्रोटेस्टेंट अपने ही संप्रदाय में थोड़ा अलग-थलग महसूस कर सकते हैं। इसलिए, मैं एक बैपटिस्ट हूँ। यह मेरा बैपटिस्ट चर्च है।

और मैं नहीं जानता, आप जानते हैं, मैं किसी प्रेस्बिटेरियन को नहीं जानता, या मैं किसी मेथोडिस्ट को नहीं जानता, या मैं किसी एडवेंटिस्ट या जो भी हो, को नहीं जानता। इन स्वैच्छिक समाजों ने जो किया वह यह था कि वे प्रोटेस्टेंटों को एक साथ लाए, जो एक दूसरे से अलग हो गए थे। इसने उन्हें सामान्य कारणों के लिए एक साथ लाया।

प्रोटेस्टेंटों ने यह सीखना शुरू कर दिया कि प्रोटेस्टेंटवाद सिर्फ उनके संप्रदाय से कहीं बढ़कर है। मुझे उम्मीद है कि आपने यह सबक सीखा होगा, मुझे उम्मीद है कि आप सभी प्रोटेस्टेंटों ने यह सीखा होगा कि ईसाई चर्च सिर्फ उनके संप्रदाय से कहीं बढ़कर है। तो, यह वाकई एक खूबसूरत तरीके से लोगों को एक साथ लाया।

दूसरा, ये उपदेश देने पर जोर देते हैं, और फिर, ये स्वैच्छिक समाज उस सिद्धांत पर जोर देते हैं जिसे निःस्वार्थ परोपकार कहा जाता है। निःस्वार्थ परोपकार का सिद्धांत। यह एक तरह का औपचारिक शीर्षक है जो हम सिद्धांत को देते हैं।

यह इंजीलवादियों या खुद को इंजीलवादी कहने वाले लोगों के बीच एक मानक सिद्धांत बन गया। ठीक है। इस सिद्धांत का क्या मतलब है? इस सिद्धांत का मतलब है कि जब आप परिवर्तित हो जाते हैं और प्रभु के पास आते हैं, तो आप स्वार्थ से दूर हो जाते हैं।

महान पापों में इंजीलवादियों के लिए स्वार्थ, अपने लिए जीना। तो, आप स्वार्थ से दूर निस्वार्थता के जीवन की ओर बढ़ते हैं, दूसरों की सेवा करने वाले जीवन की ओर। तो निस्वार्थ परोपकार बस यही है, स्वार्थ से निस्वार्थता की ओर बढ़ना।

उम्मीद है कि यह हर आस्तिक में तब प्रकट होगा जब वह आस्तिक धर्मांतरित हो जाएगा। स्वैच्छिक समाजों के बारे में तीसरी बात यह है कि वे धर्मांतरण या नवीनीकरण या विश्वास द्वारा औचित्य पर जोर देना चाहते हैं, लेकिन वे इसे एक परिवर्तित जीवन के रूप में महत्व देना चाहते हैं। धर्मांतरण एक परिवर्तित जीवन है।

धर्म परिवर्तन से आप पूरी तरह बदल गए होंगे ताकि आप निस्वार्थ परोपकार का जीवन जी सकें। अब, परिवर्तित जीवन, जिसे हम आमतौर पर इसके लिए शब्द देते हैं, वह शब्द है जिसे फिने इस्तेमाल करेंगे, और वह शब्द है पवित्रीकरण या पवित्रता। इसलिए, स्वैच्छिक समाज निस्वार्थ परोपकार में आगे बढ़कर पवित्रता के जीवन, पवित्रता के जीवन पर जोर देते हैं।

ठीक है। मेरे पास यह पावरपॉइंट पर नहीं है, लेकिन फिनी का सबसे बड़ा डर वेस्ले से आ रहा है, और फिर फिनी इसे उठाता है, मूडी इसे उठाता है, उनका सबसे बड़ा डर यह था कि लोग मसीह के पास आएंगे और फिर 30 साल बाद, लोग अभी भी यही जीवन जी रहे होंगे। यही उनका डर था।

तीस साल बाद, 40 साल बाद, 50 साल बाद, लोगों को सुसमाचार के बारे में कुछ भी पता नहीं होगा। वे निस्वार्थ जीवन जीने के बारे में कुछ भी नहीं जान पाएंगे। वे पवित्रता के बारे में कुछ भी नहीं जान पाएंगे।

वे यीशु का अनुसरण करने के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। वे बाइबल या प्रार्थना या चर्च के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। और यही उनका सबसे बड़ा डर था।

और उन्होंने लोगों को यह बताने की कोशिश की कि जब आप धर्म परिवर्तन कर लेते हैं, तो यह आपका जीवन नहीं रह जाता। यह आपका जीवन है। आप अपने से कहीं बड़ी चीज़ की ओर बढ़ रहे हैं।

और आप अपने जीवन में मसीह की छवि स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और इसी तरह आगे बढ़ रहे हैं। तो परिवर्तित जीवन में इस तरह की रुचि बहुत, बहुत महत्वपूर्ण थी। ठीक है।

इन स्वैच्छिक समाजों का चौथा पहलू जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, और मैंने कहा कि मैं इसका उल्लेख कुछ बार करूँगा, लेकिन चर्च का काम सिर्फ़ उपदेश देना या सिखाना नहीं है। चर्च का काम समाज का पुनर्निर्माण भी करता है। यह पुनर्निर्माण है।

यह उस दुनिया में न्यायपूर्ण व्यवस्था लाना है जिसमें हम रहते हैं। और अगर इसका मतलब गुलामों की मुक्ति के लिए लड़ना है, तो ऐसा ही हो। जहाँ तक इन स्वैच्छिक समाजों का सवाल है, यह सुसमाचार का काम है।

अगर इसका मतलब है कि शिक्षा में महिलाओं और पुरुषों के लिए समानता है, तो ऐसा ही हो। यही सुसमाचार का काम है। इसलिए, इन स्वैच्छिक समाजों ने वास्तव में इस बात पर जोर दिया कि चर्च का काम केवल उपदेश देना और सुसमाचार प्रचार करना ही नहीं है, बल्कि चर्च का काम समाज का पुनर्निर्माण करना और सामाजिक व्यवस्था का पुनर्निर्माण करना भी है।

तो यह वास्तव में इन स्वैच्छिक समाजों के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। ठीक है। अब, एक आखिरी बात जिसका हम उल्लेख करना चाहते हैं वह है फिने और उनका जीवन और मंत्रालय।

और यही है, मैं बस एक उद्धरण दूँगा, फिर मैं इस पर वापस आऊँगा। ओह, और वैसे, बेशक, उन्होंने पुनरुत्थान और धर्म पर व्याख्यान के अलावा बहुत कुछ लिखा है। तो, वह अपने उपदेश, अपने शिक्षण, अपने लेखन, ओबरलिन कॉलेज के अपने प्रशासन, और इसी तरह के अन्य कार्यों के लिए जाने जाते हैं।

यहाँ उनके जीवन के बारे में जानकारी देने के लिए एक उद्धरण दिया गया है। फ़िनी अमेरिकी इतिहास में किसी भी पैमाने पर एक बेहद महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। उनके पुनरुत्थान ने बढ़ती गुलामी विरोधी भावना और शहरी इंजीलवाद के उदय में एक शक्तिशाली बल दिया।

तो, फ़िनी का महत्व। वह वास्तव में इंजीलवाद की स्थापना करता है। और उसके जीवन और मंत्रालय और धर्मशास्त्र से, इंजीलवाद जाना जाता है।

इसलिए, वह जनता में अच्छी तरह से जाना जाता है। वह सिर्फ़ चर्च के लोगों द्वारा ही नहीं जाना जाता है। वह आम जनता द्वारा भी जाना जाता है। और वह जो करता है वह आम जनता को पता है।

वह एक तरह से सार्वजनिक धर्मशास्त्री हैं। मुझे बस यह देखना है कि क्या मेरे पास उनके बारे में सिर्फ़ इस एक बात के संदर्भ में कुछ और है। हाँ, मुझे लगता है, ठीक है।

ठीक है, यहाँ चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी हैं। बहुत, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति। चर्च और व्यापक संस्कृति को नया रूप देने के मामले में अमेरिकी ईसाई धर्म में वे हमारी सूची में सबसे पहले स्थान पर हो सकते हैं।

खैर, निश्चित रूप से, वह शीर्ष 10 में होगा या ऐसा ही होगा। ठीक है, फ़िनी के बारे में कोई जानकारी? उसके बारे में कोई जानकारी और वह कौन है, वह क्या करता है, वह ऐसा क्यों करता है? क्या हम फ़िनी के साथ ठीक हैं? आपका दिल आशीर्वादित है। ठीक है।

ठीक है, चलो करते हैं; चलो कम से कम ड्वाइट एल. मूडी से शुरू करते हैं। ड्वाइट एल. मूडी। मुझे इनसे फिर से गुजरना होगा।

थोड़ी सी ताली बजाओ, कोई समस्या नहीं। निस्वार्थ परोपकार, ओबरलिन कॉलेज, एंटवर्प सम्राट। उफ़, ड्वाइट एल. मूडी।

ठीक है, चलिए ड्वाइट एल. मूडी के पास चलते हैं। यह दूसरा व्यक्ति है जो अमेरिका में इंजीलवाद को आकार देने जा रहा है। सर, कार्टर।

खैर, पहले 10 में से, मैं कहूंगा, अगर मुझे मजबूर किया जाए, अगर कोई मुझे यह बताने के लिए मजबूर करे कि इस कोर्स में दस सबसे महत्वपूर्ण लोग कौन हैं? उन्हें वहां होना ही होगा। सबसे पहले, यह अमेरिकी संस्कृति में धर्मशास्त्र को नया रूप देने और चर्च के काम को न केवल सुसमाचार प्रचार के रूप में बल्कि सामाजिक, सामाजिक व्यवस्था के पुनर्गठन में मदद करने के लिए है। मेरा मतलब है, वह मुक्ति, महिलाओं की समानता, और इसी तरह के अन्य सभी मुद्दों के बारे में था।

तो, उन्होंने बहुत कुछ हासिल किया, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं। और वह बहुत, बहुत प्रसिद्ध थे, ठीक वैसे ही जैसे व्हिटफील्ड अपने समय में बहुत प्रसिद्ध थे। फिनी सामान्य संस्कृति में बहुत प्रसिद्ध थे।

फ़िनी के बारे में और कुछ? ठीक है, चलिए शुरू करते हैं। कम से कम हम ड्वाइट एल. मूडी से तो शुरुआत करेंगे। ठीक है, सबसे पहले, यहाँ उनकी तिथियाँ और जन्मस्थान हैं।

उनका जन्मस्थान बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, आप इस पर ध्यान देना चाहेंगे क्योंकि यह उनके पूरे जीवन के लिए महत्वपूर्ण होगा। और यह नॉर्थफील्ड, मैसाचुसेट्स में है।

तो कृपया मूडी के जन्मस्थान नॉर्थफील्ड, मैसाचुसेट्स पर ध्यान दें। यह एक ऐसी जगह है जिसे हम अमेरिकी ईसाई इतिहास में याद रखना चाहते हैं। ठीक है, तो वह यहाँ है, 1837, नॉर्थफील्ड, मैसाचुसेट्स।

ठीक है, मुश्किलों भरा जीवन। जब वह सिर्फ़ चार साल का था, तब उसके पिता की मृत्यु हो गई। इसलिए, उसकी माँ उसके साथ रह गई, और मुझे लगता है कि अगर मुझे सही से याद है, तो उसके आठ और भाई-बहन थे।

लेकिन यह थोड़ा मुश्किल जीवन था और परिवार को वास्तव में वित्तीय संकट में डाल दिया। लेकिन यहाँ जिस बात पर आपको ध्यान देना चाहिए वह यह है कि उनके पिता और उनकी माँ यूनिटेरियन थे। इसलिए, उनका जन्म, ड्वाइट एल. मूडी, एक यूनिटेरियन परिवार में हुआ था।

और अपनी किशोरावस्था तक, वह बस यही जानता था। वह सिर्फ़ यूनिटेरियन धर्म जानता था। उसे रूढ़िवादी ईसाई धर्म या इंजील ईसाई धर्म के बारे में कुछ भी नहीं पता था।

तो, एक तरह से, जब वह युवा था, तो उसके पास दो चीज़ें थीं, और उसे उन पर काबू पाना था। लेकिन एक तो परिवार में पिता नहीं था और परिवार आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहा था। लेकिन साथ ही सुसमाचार का कोई ज्ञान नहीं, रूढ़िवादी ईसाई धर्म का कोई ज्ञान नहीं, कोई ज्ञान नहीं, बस यूनिटेरियन, नाममात्र का यूनिटेरियन।

तो यही है, यही उसकी ज़िंदगी की शुरुआत थी। इस तरह से सब कुछ शुरू हुआ। ठीक है, अब फ़िनी के बारे में एक और बात।

जब फ़िनी 17 साल का था, तो मुझे नहीं पता कि उसे ऐसा करने के लिए क्या प्रेरित किया। यह उसके जीवन का एक ऐसा दौर था। फ़िनी ने फैसला किया कि वह नॉर्थफील्ड, परिवार को छोड़कर बोस्टन चला जाएगा।

तो, बोस्टन जाने के बारे में, मुझे खेद है। क्या मैंने फ़िनी कहा? मूडी, मूडी, मूडी, मूडी, मूडी, मूडी। ठीक है, फ़िनी, मूडी के बारे में बात खत्म हो गई। मूडी ने 17 साल की उम्र में बोस्टन जाने का फैसला किया।

ठीक है। बोस्टन में उनके एक चाचा हैं जो जूतों की दुकान चलाते हैं। और चाचा के जूते की दुकान में एडवर्ड किमबॉल नाम का एक आदमी उनके लिए काम करता था।

ठीक है, तो एडवर्ड किमबॉल के बारे में लंबी कहानी संक्षेप में। एडवर्ड किमबॉल एक संडे स्कूल शिक्षक थे। मूडी मूडी के चाचा के लिए काम करता है, और मूडी उस दुकान पर काम करना शुरू कर देता है।

एडवर्ड किमबॉल, यह संडे स्कूल शिक्षक, मूडी के खुद के बयान के अनुसार, एडवर्ड किमबॉल ही थे जिन्होंने मूडी को प्रभु के पास पहुँचाया। यह एडवर्ड किमबॉल ही थे जिन्होंने मूडी को ईसाई धर्म के सुसमाचार से परिचित कराया, यह वफ़ादार संडे स्कूल शिक्षक था। तो, एडवर्ड किमबॉल को इस बात का अंदाजा है कि यह कितना महत्वपूर्ण था।

ठीक है, अब यहाँ एक पट्टिका है जिसके पास से बोस्टन में लोग हर रोज़ गुजरते हैं। मैं कहूँगा कि हज़ारों लोग इस पट्टिका के पास से गुजरते हैं। मेरे समूह को छोड़कर कोई भी इसे पढ़ने के लिए नहीं रुकता।

जब हम बोस्टन से गुजरे, तो हमने इसे पढ़ने के लिए रुक गए। और फिर हमारे आस-पास के सभी लोगों ने आश्चर्य व्यक्त किया, हम वहाँ खड़े होकर यातायात को अवरुद्ध करके और इस पट्टिका को पढ़ते हुए क्या कर रहे हैं? क्या आप में से किसी ने यह पट्टिका देखी है? आप कबूल कर सकते हैं कि क्या आपने... क्या आप में से किसी ने यह पट्टिका देखी है? क्या आप में से किसी को पता है कि यह पट्टिका कहाँ है? क्या आप बोस्टन गए हैं, और आपने यह पट्टिका नहीं देखी है? अपने दिलों को आशीर्वाद दें। यह कैसे हो सकता है? यह कैसे संभव होगा? देखें कि इसमें क्या लिखा है: डीएल मूडी, ईसाई प्रचारक, मनुष्य के मित्र, और नॉर्थफील्ड स्कूलों के संस्थापक, हम बाद में इस बारे में बात करेंगे, 21 अप्रैल, 1855 को इस साइट पर एक जूते की दुकान में भगवान में परिवर्तित हो गए थे।

तो, यहाँ एक पट्टिका है जिसके पास से लोग हर रोज़ गुजरते हैं, जिनमें आप में से कुछ लोग भी शामिल हैं जो उस पट्टिका के पास से गुज़रे हैं और ध्यान नहीं दिया। खैर, आप इस पट्टिका पर ध्यान देंगे क्योंकि हम वास्तव में आपको यह बताने जा रहे हैं। तो यहाँ यह था, बोस्टन, जूते की दुकान, एडवर्ड किमबॉल, वह बोस्टन शहर में प्रभु के पास आता है।

ब्रिटिश स्टेट हाउस ब्रिटिश स्टेट हाउस से कुछ ही दूर है। अगर आप फ्रीडम ट्रेल पर चल रहे हैं, तो आप एक बहुत ही दिलचस्प दुकान पर पहुँचेंगे, जहाँ दुकान के बाहर एक चाय की केतली लटकी हुई है। क्या आप चाय की केतली की तस्वीर देख सकते हैं? वह चाय की केतली लगभग 1850 के आसपास वहाँ रखी गई थी क्योंकि यह एक चाय की दुकान थी, और यह चाहती थी कि लोग जानें कि यह एक चाय की दुकान है।

वह चाय की केतली अभी भी वहाँ लटकी हुई है। क्या आप जानते हैं कि वह चाय की केतली कहाँ है? ठीक है। अगर आप सड़क के उस तरफ चाय की केतली के दाईं ओर जाते हैं, तो आप ब्रिटिश स्टेट हाउस आने से पहले इस पट्टिका पर आएँगे।

तो, यह है। हम इसे देखने जा रहे हैं। जो कोई भी मेरे साथ जाएगा, हम इसे देखेंगे।

आप हमारी फील्ड ट्रिप पर इसी चीज़ की तस्वीरें लेने जा रहे हैं क्योंकि आप इसे मिस नहीं करना चाहते। यह बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है।

तो, वह वहाँ चला गया। अब वह धर्मांतरित हो गया है और इसी तरह की अन्य बातें भी। इसलिए, उसने एक चर्च में शामिल होने का फैसला किया।

अब जब वह धर्म परिवर्तन कर चुका है, तो उसे चर्च में शामिल हो जाना चाहिए। संक्षेप में, उसे चर्च में शामिल होने में परेशानी हो रही है, लेकिन आज हमारे पास इस पर चर्चा करने का समय नहीं है। इसलिए, हम बुधवार को इस पर चर्चा करेंगे।

ठीक है। आपका दिन शुभ हो। हम आपसे बुधवार को मिलेंगे।

और फिर कॉलेज आपको लगभग डेढ़ हफ़्ते की छुट्टी देता है क्योंकि उन्हें आपके लिए बहुत दुख होता है।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 15 है, 19वीं सदी में इंजीलवाद, फिन्नी और मूडी।